UGC Approved Journal
- Research Link

Since March 2002

An International, Registered & Referred Monthly Journal : Hindi Literature
Research Link - 160, Vol - XVI (5), July - 2017, Page No. 49-51
ISSN - 0973-1628 ■ RNI - MPHIN-2002-7041 ■ Impact Factor - 2015 - 2.782

श्रीलाल शुक्ल के उपन्यासों में नारी

प्रस्तुत शोधपत्र हिन्दी साहित्य के प्रमुख उपन्यासकार श्रीलाल शुक्ल के उपन्यासों में नारी चित्रण का अध्ययन किया गया है। श्रीलाल शुक्ल ने अपने उपन्यासों में कुछ ऐसे नारी चरित्रों को स्थान दिया है, जो वर्तमान दौर में महिलाओं की स्थिति में आ रहे कतिपय बदलावों को उद्घाटित करते हैं। शुक्लजी के कई नारी पात्र भिन्न-भिन्न भूमिकाओं में न केवल अपने समय को वरन् अपने वर्गीय स्वरुप को भी सामने लाते हैं। 'सूनी घाटी का सूरज' उपन्यास की नायिका 'सत्या', एक इंजीनियर की पुत्री होने के कारण उच्च मध्यवर्ग या अभिजात्य वर्ग का प्रतिनिधित्व करती है। शुक्लजी ने महिला चरित्रों को मात्र अभिजात्य वर्ग या मध्यमवर्ग तक ही सीमित रखा नहीं रखा, उनके उपन्यास 'पहला पड़ाव' की 'यशोदा' मेहनतकश सर्वहारा वर्ग का प्रतिनिधित्व करती है। कुल मिलाकर श्रीलाल शुक्लजी ने अपने उपन्यासों में महिलाओं के विभिन्न रुपों को उजागर करने का प्रयास किया है। समाज में आ रहे बदलावों के साथ-साथ उनके महिला चरित्रों में भी बदलाव देखने को मिलता है। चरित्रों की यही विविधता सम्पूर्ण समाज में महिलाओं की स्थिति को सामने लाने का एक बेहतर प्रयास है।

कु.पूजा भट्ट

प्रत्येक समाज में महिलाओं और पुरूषों की स्थिति उस समाज में प्रचलित आदर्शों, मूल्यों व मान्यताओं तथा उन्हें सौंपे गए अथवा उनके लिए निर्धारित किए गए कार्यों तथा मानदण्डों के अनुसार निश्चित होती है।

मानव समाज के विकास का इतिहास बताता है कि विश्व के लगभग सभी समाजों में व्यक्तिगत सम्पत्ति के उदय से लेकर आज तक समाज की अधिकांश मान्यताएँ पुरूषों द्वारा ही निर्धारित की जाती रही हैं। इन पुरूष प्रधान मान्यताओं के चलते स्त्री के स्वतन्त्र अस्तित्व को मान्यता नहीं मिली। प्राचीन काल का साहित्य बताता है कि स्त्री को कभी देवी के रूप में पूजा गया, तो कभी पाप और भोग की वस्तु मानकर उसका तिरस्कार किया गया। ''परम्परागत मानसिकता ने स्त्री को देवी और दानवी दो छोरों में बाँट दिया है। ..... किन्तु वास्तविकता यह है कि न तो वह देवी है, न दानवी। वह मानवी है। उसमें दया, माया, ममता, विश्वास है। वह क्रूर, कठोर, विश्वासघातिनी भी है। वह प्यार करना भी जानती है और घृणा भी, सुलह करना भी जानती है और कलह भी।''(1)

आधुनिक समय में शैक्षिक विकास के साथ ही महिलाओं ने पुरातन सामाजिक मान्यताओं को तोड़ने की दिशा में कदम उठाया है। वर्तमान समाज में जिस हद तक स्त्री आर्थिक रूप से स्वतंत्र है, उसी स्तर तक वह सामाजिक बंधनों को तोड़ पाने में सक्षम हुई है।

यह दौर महिलाओं की छटपटाहट का दौर है। जहाँ वह अपने जीवन और वैयक्तिक स्वतंत्रता के लिए सचेत प्रयास कर रही है, वहीं पुराने सामाजिक ढाँचे की बेड़ियां उसे अपने चंगुल में बनाए रखने की कोशिश में हैं। अस्तित्व के इस संघर्ष में नारी का सामना न केवल पुरूष प्रधान ताकतों, मूल्य–मान्यताओं से है, वरन् उस मानसिकता से भी है, जो पुरूषों को अधिक महत्व देती है। यह संघर्ष महिलाओं के भीतर एक हद तक घर कर चुकी आत्महीनता से भी जुड़ा हुआ है।

श्रीलाल शुक्ल ने अपने उपन्यासों में बदलते समाज में स्त्रियों की बदलती स्थिति को उजागर करने का सफल प्रयास किया है।

भारतीय समाज में विश्व के विभिन्न समाजों की भाँति पुरूष प्रधानता विद्यमान है। महिलाओं के लिए बने नियम, कानून, मर्यादा और स्वतंत्रता की सीमाएँ पुरूषों पर केन्द्रित समाज द्वारा ही निर्धारित की जाती हैं। पैदा होने से लेकर मृत्यु तक उनके सम्पूर्ण जीवन के निर्धारक या तो प्रत्यक्ष पुरूष ही होते हैं या फिर पुरूष प्रधान मानसिकता। पुरूष प्रधानता के इस बंधन में बँधने की ओर सबसे बड़ा कदम विवाह के रूप में होता है।

भारतीय समाज में विवाह को एक सामाजिक–धार्मिक बंधन माना जाता रहा है। विवाहेत्तर प्रेम संबंधों को इस समाज में नैतिक नहीं माना जाता है।

''किसी युवक और युवती के प्रणय का आभास पाते ही समाज में उनकी निंदा होने लगती है।''(2) हालांकि यह बात और है कि इस प्रेम दण्ड की भोगी मात्र नारी ही होती है। पुरूष जो उसमें बराबरी का भागीदार होता है, इस अभियोग से जन्मजात मुक्ति पा चुका होता है।

विवाहित स्त्री से समाज की यह अपेक्षा रहती है कि वह पर–पुरूष से कोई संबंध नहीं रखेगी। ''उनकी प्रेयसी की स्थिति बिल्कुल साफ थी। वह भागकर आयी थी, इसलिए कुतिया थी। लोग

शोधछात्रा, राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, रामनगर (नैनीताल), कुमाऊँ विश्वविद्यालय, नैनीताल (उत्तराखण्ड)

उससे मजाक कर सकते थे और हमेशा यह समझकर चलते थे कि उसे मजाक अच्छा लगता है। यह शिवपालगंज के नौजवानों का सौभाग्य था कि कुतिया ने भी उनको निराश नहीं किया।''(3)

भारतीय समाज में नारी से यह अपेक्षा की जाती रही है कि वह त्याग करे और अपनी मर्यादा में रहे।

''पुरूष का जीवन संघर्ष से प्रारम्भ होता है और स्त्री का आत्म–समर्पण से।''(4)

सामाजिक मान्यता व रीति–रिवाजों द्वारा कैद महिलाएँ या तो इसे सहजता से स्वीकार कर लेती हैं या फिर इस घुटन से निजात पाने के लिए जो प्रयास करती हैं, वह उनकी मुक्ति के मार्ग में भटकाव ही साबित होते हैं।

''छोटका बड़े ठाकुर की दूसरी स्त्री थी। बड़ी को बड़का कहते थे। वह तो दिन–रात शराब के नशे में धुत पड़ी रहती थी। ..... छोटका भी घर का अनाज चुराकर बेचती है। गाँवों में गृहस्थी के भार से दबी हुई स्त्रियाँ यह सब कुछ करती हैं।''(5)

समाज का पुरूष प्रधान नजरिया स्त्री को मात्र यौन सुख और सन्तानोत्पत्ति का साधन मानता है। इतना ही नहीं यौन सम्बन्धों के मामले में भी पुरूष की प्रधानता हावी रहती है। शुक्लजी ने 'सूनी घाटी का सूरज' उपन्यास में चित्रित किया है– ''पुरूष उसे अपनी बाहों में समेटे हुए धीरे–धीरे कह रहा था, यह सातवाँ तरीका है। तुम्हारे ओंठ पार्टनर के ओंठों पर क्रास बनाते हुए मिलें। ..... इस तरह, स्टाइल नंबर सेवेन।''(6)

पुरूष प्रधानता मात्र यौन संबंधों तक ही सीमित नहीं है। ग्रामीण परिवेश में आज भी स्त्रियों का धीमी आवाज में बात करना ही ठीक माना जाता है।

'अज्ञातवास' में कहा गया है कि ''हमारे बाबा थे, तो वे जनाना को नकफुसरी कहते थे। हमारी महतारी जब कभी घर के भीतर कुछ बोलती तो बाबा हंसते। कहते नकफुसरी फुसर–फुसर कर रही है। ..... तो सरकार, जनाना का धरम है कि फुसर–फुसर बात करे और मर्द बच्चा का धरम कि कड़क के बोले। तिरछा–तिरछा चले।''(7)

तत्कालीन समाज में जहाँ नारी को घर की दहलीज लाँघने का भी अधिकार नहीं था, वहीं 'अज्ञातवास' उपन्यास का नायक रजनीकांत अपनी पत्नी को गाँव में छोड़कर शहर की डॉ0 सीता दत्त से संबंध रखता है तथा उसे अपनी उपपत्नी स्वीकार करता है। ''सारी वितृष्णा और कल्पना के सहारे उन्होंने डॉ0 सीता दत्त को अपनी उपपत्नी बनाया। ..... उनके मन ने पुकारकर कहा, 'यही मेरे वर्तमान की रानी है। मेरी चिरपत्नी। और वह है मौलिक पत्नी। बेसिक वाइफ। मूल की तरह ही उसका पृथ्वी से ऊपर उभरना ठीक नहीं। दोनों अपनी जगह रहें।''(8)

शुक्ल जी ने महिलाओं के एक और पक्ष को उजागर किया है। वे लिखते हैं कि यहाँ प्रेम और विवाह भी एक तरीके का व्यापार है। जहाँ भावनाओं के स्थान पर आरामदेह भविष्य और सुखमय जीवन ही प्रेम का आधार बनता है। ''यहाँ सब फरेबों के साथ ब्याह भी एक फरेब है, क्योंकि उसकी जड़ में प्यार नहीं है ..... पिछले पाँच सालों में छात्राओं के उन प्रेम–विवाहों की संख्या, जो अध्यापकों के साथ हुए थे. छात्रों के साथ हुए प्रेम–विवाहों से कहीं ज्यादा थी।''(9)

वर्तमान समाज में महिलाओं का उत्पीड़न, मारपीट, गाली–गलौच, अभद्रता आदि पुरूषों की ओर से की जाने वाली सामान्य व स्वाभाविक प्रतिक्रिया मानी जाती है। इन सबके बावजूद 'औरत को भले ही पुरूष अपने पैरों की जूती' समझें, परन्तु महिलाओं की मौन स्वीकारोक्ति उनकी मानसिक गुलामी का स्पष्ट प्रमाण दे देती है। अपने उपन्यास 'मकान' में एक विविध सन्दर्भ में कही गयी यह बात कुछ और ही समझा जाती है– ''औरत पाँव की जूती है। भले ही इस कहावत को लोग उल्टे–सीधे ढंग से कहते रहें, मैंने मीनाक्षी को एक बार समझाया था कि पाँव की जूती का सम्बन्ध चिरन्तन घनिश्ठता का सम्बन्ध है। मेरे लिए मीनाक्षी एक ऐसी जूती है, जिसकी खाल तलुए में भले ही चुभती रहे, मैं जानता हूँ कि चुभन सिर्फ खाल तक रहेगी और उसे पहने हुए मैं पूरी यात्रा बिना किसी जोखिम के पूरी कर लूँगा।''(10)

शुक्ल जी बढ़ती यौन हिंसा पर चर्चा करते हुए तत्कालीन समाज के उस मुखौटे को हटा देता है। जहाँ 'यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते, रमन्ते तत्र देवताः' जैसे महानतम विचार समान रूप में विराजमान रहते हैं। ''सिम्मी की सबसे बड़ी मुसीबत उसका मोहल्ला है। जब उसका भाई यहाँ था, तब की बात और थी। अकेले में उसे चारों ओर गुण्डे ही गुण्डे दीख पड़ते हैं। वे सीटी बजाने वाले कालेज के छोकरे नहीं हैं, वे लड़कियों को छेड़ते नहीं हैं, पर उनके मन में आ जाए, तो उनकी कलाई पकड़कर घसीट सकते हैं।''(11)

शुक्ल जी के उपन्यासों में विभिन्न स्थानों पर पुरूषों के विवाहेत्तर सम्बंधों का चित्रण किया गया है। 'मकान' उपन्यास में नारायण का सिम्मी के साथ विवाहेत्तर सम्बन्ध था। 'सूनी घाटी का सूरज' उपन्यास में एक चरित्र पंडितजी जो पाठशाला के अध्यापक हैं, विधुर होने के बावजूद लछमिया कोरिन नाम की मजदूर स्त्री के साथ कथित प्रेम या व्यभिचार में संलिप्त रहते हैं। 'अज्ञातवास' का नायक रजनीकांत अपनी ग्रामीण पत्नी को छोड़कर डॉ0 सीमादत्त नामक शहरी परिवेश में पली–बड़ी युवती पर आसक्त है। 'आदमी का जहर' उपन्यास में भ्रष्ट नेता शांतिप्रकाश के पार्वती महिला आश्रम की अधीक्षक कुमारी वीणा गहलौत से अनैतिक सम्बन्ध थे। 'सीमाएँ टूटती हैं', उपन्यास का प्रधान चरित्र विमल पत्नी की मृत्यु के उपरान्त दुर्गादास की बेटी चाँद तथा बहू नीला के प्रति सहानुभूति दिखाता है। यही सहानुभूति उसके द्वारा चाँद से प्रेम के रूप में प्रस्फुटित और विकसित होती है।

सामाजिक रूप से तथा कानूनी रूप से पति–पत्नी के विवाह सम्बन्धों की समाप्ति को विवाह विच्छेद के रूप में जाना जाता है। भारतीय समाज में विभिन्न वर्गों में विवाह विच्छेद के सम्बन्ध में अलग–अलग मान्यताएँ हैं। इन सबके बावजूद पति–पत्नी के बीच ऐसे सम्बन्ध भी होते हैं, जिन्हें वैवाहिक सम्बन्धों के दायरे में रख पाना कठिन हो जाता है। यह अघोषित विच्छेद परिवारों में महिलाओं की स्थिति को और अधिक बदतर बना देता है।

शुक्लजी के अनुसार इस स्थिति के पीछे छिपे कई कारणों में से एक पति–पत्नी के शारीरिक स्वास्थ्य से भी सम्बन्धित है। 'राग विराग' में सुवीर वैवाहिक जीवन हेतु शारीरिक रूप से स्वस्थ नहीं है। इस कारण ''सुवीर दिन–भर और देर रात तक अपने मित्रों में फँसा रहा है। रात को सुकन्या के कमरे में आते ही वह नवविवाहितों जैसा नहीं, पुराने सुपरिचित पति का सा व्यवहार करता है।''(12)

भारतीय नारियों में विधवा होना नारी का सबसे त्रासद और संघर्षपूर्ण रूप है। आज के समाज में विधवा स्त्री की स्थिति जीवित

होते हुए भी सती से कहीं अधिक बदतर हो जाती है। 'रागदरबारी' उपन्यास में एकमात्र वैधव्य नारी 'गयादीन की विधवा बहन' का वर्णन है, जो गयादीन के साथ रहती है। बेला की बुआ गयादीन के घर का काम देखती थी और बेला को दरवाजे से बाहर नहीं निकलने देती थी।''(13) 'रागविराग' उपन्यास में शंकरलाल की माँ विधवा हो जाती है। शंकरलाल और उसका बड़ा भाई दोनों शहर में रहते हैं, इस कारण उनकी विधवा माँ गाँव में अकेली रहकर कष्टपूर्ण जीवन व्यतीत करती हुई मर जाती है।

हमारा समाज प्रेम की परिणति विवाह में चाहता है। ऐसा नहीं है कि वैवाहिक सम्बन्ध प्रेम पर आधारित हों। विवाह के उपरान्त पुरूष द्वारा पत्नी के साथ किए जाने वाले व्यभिचार को समाज की मूक मान्यता मिल जाती है। 'अज्ञातवास' में शुक्लजी एक प्रसंग के जरिए इस स्थिति को अधिक स्पष्ट करते हैं। ''किसी भूखे जानवर की तरह उन्होंने उसके ब्लाउज को फाड़ना शुरू किया, पर रानी की बाहें जैसे बर्फ हों, पत्थर हों। वे उनकी उंगलियों पर आकर जड़ हो गई। जैसे वह खुद पत्थर हो गई हो। उसके निश्चेत हो जाने पर, अपने आकार की दानवीयता में उन्होंने उस पथराई देह को समेट लिया, निगल लिया।''(14)

पुरातन काल से ही पति को परमेश्वर के तुल्य मानने वाली समाज व्यवस्था ने स्त्रियों को गुलामी की जंजीरों में जकड़े रखा। वर्तमान समाज में महिलाओं को एक हद तक आर्थिक स्वतंत्रता हासिल हो पायी है। इस आर्थिक आजादी ने जहाँ आर्थिक रूप से महिलाओं को आत्मनिर्भरता की ओर दिशा दी है, वहीं इसने महिलाओं को सामाजिक स्तर पर भी स्वतंत्रता प्रदान की है।

श्रीलाल शुक्लजी ने अपने उपन्यासों में कुछ ऐसे नारी चरित्रों को भी स्थान दिया है, जो वर्तमान दौर में महिलाओं की स्थिति में आ रहे कतिपय बदलाओं को उद्घाटित करते हैं। 'अज्ञातवास' उपन्यास की डॉ0 सीमा दत्त कहती हैं, ''मैं नई रामायण लिख रही हूँ। सीता को राम ने बिना अपराध के छोड़ दिया था, मैं वैसी सीता नहीं। अपना अपमान करने वाले राम को मैं स्वयं छोड़ चुकी हूँ।''(15)

शुक्लजी के कई नारी पात्र भिन्न–भिन्न भूमिकाओं में न केवल अपने समय को वरन अपने वर्गीय स्वरूप को भी सामने लाते हैं। 'सूनी घाटी का सूरज' उपन्यास की नायिका 'सत्या', एक इंजीनियर की पुत्री होने के कारण उच्च मध्यवर्ग या अभिजात्य वर्ग का प्रतिनिधित्व करती है। 'अज्ञातवास' में जहाँ एक ओर 'डॉ0 सीमादत्त' अपने अस्तित्व और सम्मान के लिए लड़ते हुए अपने पति को छोड़ देती है, वहीं रजनीकांत की अशिक्षित ग्रामीण पत्नी 'रानी' अपनी अशिक्षा के चलते परित्यक्त है। 'रागदरबारी' उपन्यास में गयादीन की इकलौती बेटी 'बेला' अपने अन्तर्जातीय प्रेम सम्बंध के कारण समाज में प्रतिबंधों को झेलने को मजबूर है।

ऐसा नहीं कि शुक्ल जी ने महिला चरित्रों को मात्र अभिजात्य वर्ग या मध्यमवर्ग तक ही सीमित रखा हो, उनके चर्चित उपन्यास 'पहला पड़ाव' की 'यशोदा' मेहनतकश सर्वहारा वर्ग का प्रतिनिधित्व करती है। वह अपने पति के साथ मजदूरी करती है और पति की मृत्यु के पश्चात् उसकी मौत के लिए जिम्मेदार लोगों के विरूद्ध संघर्ष भी करती है। शुक्लजी आज के दौर में शिक्षित युवतियों को भी अपने उपन्यासों में जगह देते हैं। 'विश्रामपुर का संत' उपन्यास में 'सुन्दरी' और अन्य सर्वोदय कार्यकर्ताओं ने महिलाओं के लिए पीढ़ियों से खींची गयी कथित लज्जा और मर्यादा की दीवार को ढ़हाकर एक नया उदाहरण प्रस्तुत किया है।

इस तरह श्रीलाल शुक्ल जी ने अपने उपन्यासों में महिलाओं के विभिन्न रूपों को उजागर करने का सफल प्रयास किया है। समाज में आ रहे बदलावों के साथ–साथ उनके महिला चरित्रों में भी बदलाव देखने को मिलता है। चरित्रों की यही विविधता सम्पूर्ण समाज में महिलाओं की स्थिति को सामने लाने का एक बेहतर प्रयास है।

सन्दर्भ :

(1) रजवार, डॉ0 शीला : स्वातंत्रयोत्तर कथा साहित्य में नारी के बदलते सन्दर्भ, पृष्ठ 19.

(2) *निर्मम, हेमराज : हिन्दी उपन्यासों में मध्यवर्ग, पृष्ठ 138.*

(3) *शुक्ल, श्रीलाल : रागदरबारी, पृष्ठ 72.*

(4) *वर्मा, महादेवी : श्रृंखला की कड़ियाँ, पृष्ठ 38.*

(5) *शुक्ल, श्रीलाल : सूनी घाटी का सूरज, पृष्ठ 28.*

(6) *शुक्ल, श्रीलाल : सूनी घाटी का सूरज, पृष्ठ 98.*

(7) *शुक्ल, श्रीलाल : अज्ञातवास, पृष्ठ 43.*

(8) *शुक्ल, श्रीलाल : अज्ञातवास, पृष्ठ 76.*

(9) *शुक्ल, श्रीलाल : सीमाएँ टूटती हैं, पृष्ठ 83.*

(10) *शुक्ल, श्रीलाल : मकान, पृष्ठ 84.*

(11) *शुक्ल, श्रीलाल : मकान, पृष्ठ 119.*

(12) *शुक्ल, श्रीलाल : राग विराग, पृष्ठ 74.*

(13) *शुक्ल, श्रीलाल : रागदरबारी, पृष्ठ 97.*

(14) *शुक्ल, श्रीलाल : अज्ञातवास, पृष्ठ 88.*

(15) *शुक्ल, श्रीलाल : अज्ञातवास, पृष्ठ 76.*

❁❁